

dainikbhaskar.com

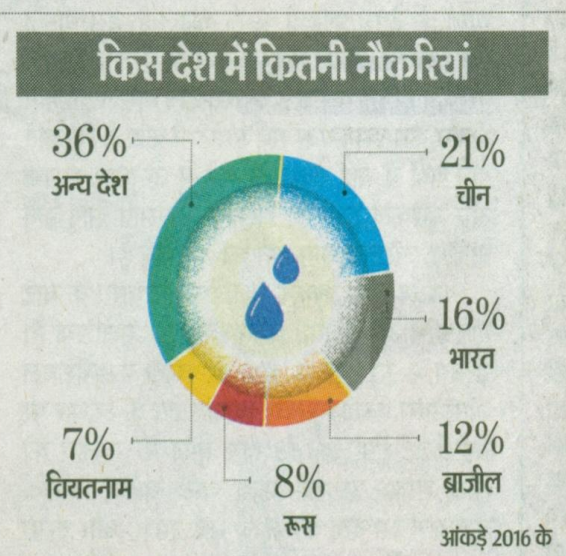
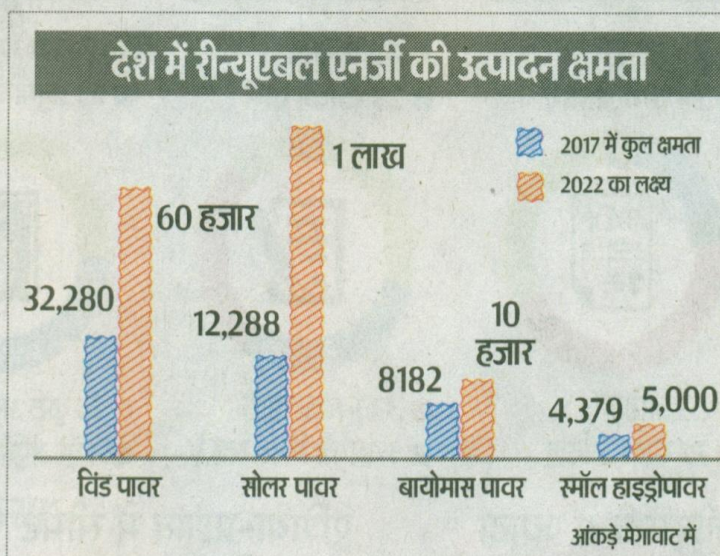
दैनिक भास्कर, जयपुर

सोमवार, 29 मई, 2017

स्पेशलाइज्ड फील्ड में प्रवेश के लिए मास्टर डिग्री जरूरी, साइंस और मैनेजमेंट के छात्रों के लिए ज्यादा मौके अगले पांच वर्षों में दोगुनी हो जाएगी रीन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में प्रोफेशनल्स की संख्या

ऊर्जा की बढ़ती खपत से इसकी मांग बढ़ी है और यही वजह है कि विश्वभर के सभी देश ऊर्जा के नए-नए स्रोतों का पता लगाने में जुटे हुए हैं। ऐसे में रीन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में विकास की संभावनाएं बढ़ी हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह ऊर्जा के प्रमुख स्रोत के रूप में उभरा है। इसका प्रभाव भारत में भी देखने को मिला है और एक तरह तरफ जहां इस क्षेत्र में विकास हुआ है, वहीं जॉब के नए अवसर भी बने हैं। हाल ही में इंटरनेशनल रीन्यूएबल एनर्जी एजेंसी द्वारा जारी एनुअल रीव्यू रिपोर्ट, 2017 में बताया गया है कि रीन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में देश में 2015 में 48 हजार लोगों को सीधे तौर पर रोजगार मिला था। 2016 में यह संख्या बढ़कर 60 हजार 500 हो गई। यानी एक साल के दौरान इस क्षेत्र में 12 हजार 500 नए रोजगार के अवसर बने हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि देश के रीन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र में 2022 के अंत तक 58 हजार नई नौकरियां मिलेंगी।

एक रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में देश में रीन्यूएबल एनर्जी से ऊर्जा उत्पादन में सबसे ज्यादा 56.8 फीसदी हिस्सेदारी पवन ऊर्जा की है। इसके बाद 18 फीसदी सौर ऊर्जा, 16 फीसदी बायोमास एनर्जी की है। फिलहाल सरकार का सबसे ज्यादा जोर सौर ऊर्जा के उत्पादन पर है। सरकार द्वारा 2022 तक सौर ऊर्जा के उत्पादन का लक्ष्य 1 लाख मेगावाट तय किया गया है। इंटॉलड कैपेसिटी के मामले में पवन ऊर्जा में भारत विश्वभर में चौथे और सौर ऊर्जा के मामले में तीसरे स्थान पर है। इस क्षेत्र में 100 फीसदी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की मंजूरी होने के कारण भी जॉब के अवसर बढ़ने की संभावना है।



इसमें छात्र टेक्नोलॉजी के अलावा मैनेजमेंट क्षेत्र में भी कैरियर बना सकते हैं। ऊर्जा वितरण कंपनियों और उत्पादन प्लांट में टेक्निकल स्टाफ की जरूरत तो होती ही है, मैनेजमेंट के स्तर पर भी स्टाफ का अहम योगदान होता है। यह एक स्पेशलाइज्ड फील्ड है, इसलिए अच्छे पदों पर जॉब के लिए कम से कम मास्टर डिग्री कोर्स करना होता है। इसके बाद छात्र इसमें जॉब कर सकते हैं और यही एक वजह भी है कि इसमें ट्रेंड प्रोफेशनल की संख्या जरूरत से कम है।

इंजीनियरिंग, एनर्जी मैनेजमेंट के कोर्स से आसान होगी एंट्री

रीन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में साइंस और मैनेजमेंट दोनों ही स्ट्रीम में छात्रों के लिए अवसर मौजूद हैं। हालांकि इसके अधिकांश कोर्स पोस्टग्रेजुएट स्तर पर कराए जाते हैं। साइंस स्ट्रीम से

12वीं करने के बाद छात्र इससे संबंधित जैसे फिजिक्स, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, अप्लाइड फिजिक्स आदि के बैचलर डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। इंजीनियरिंग कोर्स में प्रवेश जॉइंट एंट्रेंस एग्जामिनेशन के वैलिड स्कोर के आधार पर मिलता है। बीएससी कोर्स के लिए अधिकतर संस्थान खुद का एंट्रेंस टेस्ट आयोजित करते हैं। कुछ संस्थानों में क्वालिफाइंग एग्जाम के आधार पर भी प्रवेश मिलता है। बैचलर डिग्री के बाद छात्र एनर्जी स्टडीज के एमटेक या रीन्यूएबल एनर्जी के एमएससी कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। एमटेक में प्रवेश के लिए शीर्ष संस्थानों में गेट स्कोर जरूरी होता है। वहीं मैनेजमेंट के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए छात्र एनर्जी मैनेजमेंट के मास्टर डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। इसके अलावा कई संस्थानों में इसके पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स भी कराए जाते हैं।

ऊर्जा वितरण कंपनियों में अवसर

पढ़ाई पूरी करने के बाद छात्र ऊर्जा के क्षेत्र से संबंधित कंपनियों में जॉब कर सकते हैं। ये प्रोफेशनल ऊर्जा वितरण करने वाली प्राइवेट और सरकारी कंपनियों में विभिन्न इंजीनियरिंग पदों पर जॉब कर सकते हैं। मैनेजमेंट करने वाले छात्र पावर रिसोर्स मैनेजमेंट, ऑडिटिंग, पावर जनरेशन और पॉलिसी मेकिंग में अहम भूमिका निभा सकते हैं। प्रोफेशनल के लिए विदेशों में भी रोजगार के अवसर मौजूद हैं।

25-30 हजार रु. शुरुआती पैकेज

इस क्षेत्र में फ्रेशर को 25-30 हजार रुपए का शुरुआती पैकेज मिलने की संभावना होती है। हालांकि सरकारी और प्राइवेट कंपनियों में सैलरी पैकेज अलग हो सकते हैं। कुछ वर्ष के अनुभव के बाद सैलरी 50 से 60 हजार रुपए प्रति माह तक हो सकती है।